

डॉ. रॉबर्ट पीटरसन, द थियोलॉजी ऑफ ल्यूक-एक्ट्स, सत्र 18, मार्शल, 3. विरोध के बावजूद प्रगति, 4. अन्यजातियों का समावेश, 5. चर्च जीवन और संगठन

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह हावर्ड मार्शल द्वारा सत्र 18 है। 3. विरोध के बावजूद प्रगति. 4. अन्यजातियों का समावेश, 5. चर्च जीवन और संगठन।

हम लुकान धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान, विशेष रूप से अधिनियमों में, अधिनियमों पर हॉवर्ड मार्शल की टिप्पणी के साथ जारी रखते हैं। अधिनियमों का धर्मशास्त्र, इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य, मिशन और संदेश, और अब विरोध के बावजूद प्रगति।

एक्ट्स उस विरोध से बहुत चिंतित है जो सुसमाचार के प्रसार को घेरता है। अधिनियम 14:22. अनेक कष्टों के माध्यम से, हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहिए। 14:22. ल्यूक मानता है कि जिस प्रकार यीशु का मार्ग उसे विरोध के बीच ले गया, जिसकी परिणति न्यायिक हत्या में हुई, उसी प्रकार परमेश्वर के वचन का मार्ग भी विरोध से घिरा हुआ है।

इसलिए, हमें आश्चर्य नहीं है कि अधिनियम सुसमाचार के विरोध को सूचीबद्ध करता है क्योंकि यीशु ने निश्चित रूप से विरोध किया था। उनके पूरे मंत्रालय की परिणति मूलतः उनकी न्यायिक हत्या में हुई। अधिनियमों की शुरुआत पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों के उपहास से होती है और महासभा द्वारा उन्हें यीशु के बारे में चुप रहने के लिए मजबूर करने के प्रयासों के साथ जारी रहती है।

यह पहले शहीद स्टीफन की मृत्यु और उसके बाद उत्पीड़न की लहर के साथ अपने चरम पर पहुँचता है। एक यहूदी राजा ने जेम्स को मौत के घाट उतारकर लोगों का पक्ष लेने की कोशिश की, और केवल एक चमत्कार ने पीटर को उसी भाग्य से बचाया। जब मिशनरी रोमन दुनिया में गए, तो उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा।

आमतौर पर, इसकी शुरुआत यहूदियों से होती थी जो अन्यजातियों के सुसमाचार प्रचार को नापसंद करते थे। लेकिन कई मामलों में, यहूदी मिशनरियों के खिलाफ हिंसा के कृत्यों में मूर्तिपूजक समर्थकों से समर्थन प्राप्त करने में सक्षम थे। इस कारण, कई बार मिशनरियों को मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया।

उत्तरार्द्ध का रवैया अस्पष्ट था। इस अवसर पर, वे शांति भंग करने के लिए जिम्मेदार प्रतीत होने वाले लोगों के खिलाफ संक्षिप्त न्याय देने के लिए काफी तैयार थे। हालाँकि, अन्य समय में, वे मिशनरियों के रक्षकों के रूप में नहीं, बल्कि कानून के निष्पक्ष और उदासीन समर्थकों के रूप में दिखाई देते हैं, जो मानते हैं कि मिशनरियों की गतिविधियाँ किसी भी तरह से रोमन कानून और रीति-रिवाज के विपरीत नहीं हैं।

आदर्श मामला पॉल का है, और यह इस विषय में ल्यूक की रुचि है जिसके कारण उसकी कैद की अवधि के लिए उल्लेखनीय मात्रा में स्थान समर्पित हुआ है। यहां, ल्यूक ने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि पॉल ने रोम के कानूनों का उल्लंघन नहीं किया था और, एक तरह से, केवल कानूनी तकनीकीता ने उसे रोमन गवर्नर द्वारा मुक्त किए जाने से रोका था। हालाँकि, साथ ही, कहानी यह बताती है कि रोमन गवर्नर मामले को संभालने में दोष से मुक्त नहीं थे।

जब तक राज्यपाल यहूदियों से अनुग्रह प्राप्त करने और प्रतिवादियों से रिश्वत मांगने के लिए तैयार रहेंगे, तब तक मसीहियों को न्याय से कम मिलने की उम्मीद करनी चाहिए। इस प्रकार लूका जीवन की कठोर वास्तविकताओं के प्रति जागरूकता दिखाता है। चाहे मसीही कितने भी निर्दोष क्यों न हों, वे फिर भी अन्याय के शिकार होने की उम्मीद कर सकते हैं।

जहाँ तक यहूदियों का सवाल है, पॉल के खिलाफ आरोप यह था कि उसने मंदिर को अपवित्र करने की कोशिश की और, ज्यादा सामान्य तौर पर, वह जहाँ भी जाता था, यहूदी पाखंड को बढ़ावा देता था। इनमें से पहला आरोप, जो उसकी गिरफ्तारी के लिए एक बहाने से ज्यादा कुछ नहीं था, को पूरी तरह से नकार दिया गया। इसके विपरीत, पॉल को एक कानून का पालन करने वाले यहूदी उपासक के रूप में पेश किया गया।

दूसरे आरोप का खंडन इस तर्क से किया जाता है कि पॉल केवल पुराने नियम में निर्धारित तरीके से भगवान की पूजा और सेवा कर रहा था और वह अपने विश्वासों में एक फरीसी था और रहेगा। दूसरे शब्दों में, ईसाई धर्म सच्चा यहूदी धर्म है। यह मूल बिंदु विस्तार से बताया गया है, लेकिन यह स्पष्ट है कि इससे यहूदियों के साथ कोई मतभेद नहीं हुआ, हालांकि कुछ फरीसी इसके प्रति सहानुभूति रखते थे।

यहां फिर से, ल्यूक केवल कठिन वास्तविकता प्रस्तुत कर सकता है कि कई यहूदी ईसाई दावे को स्वीकार करने से इनकार करते हैं कि ईसाई धर्म यहूदी धर्म की पूर्ति है। साथ ही, ल्यूक यह इंगित करने के लिए मूल भाव का उपयोग कर रहा है कि रोमन दृष्टिकोण से, ईसाई धर्म को यहूदी धर्म का वैध विकास माना जाना चाहिए और इसलिए, साम्राज्य के भीतर एक सहनशील धर्म के समान विशेषाधिकार प्राप्त स्थान प्राप्त करना चाहिए। यहूदियों और ईसाइयों के बीच झगड़े प्रकृति में धार्मिक हैं और रोमन कानून के संज्ञान में नहीं आते हैं।

दरअसल, इस विरोध का सामना करते हुए दो महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। एक, मसीहियों को दृढ़ रहने और उन क्लेशों के बावजूद वफ़ादार बने रहने के लिए कहा जाता है जिन्हें उन्हें सहना पड़ता है। जब उन्हें प्रचार करना बंद करने का आदेश दिया जाता है, तो उनका जवाब ऐसा करने से इनकार करने वाला होता है।

सच है, उन्हें उन शहरों से पीछे हटना ज़रूरी लगता है जहाँ उन्हें प्रचार करना जारी रखने से मना किया जाता है, लेकिन वे जहाँ भी ऐसा करने का अवसर पाते हैं, वहाँ बस सुसमाचार प्रचार करते रहते हैं। सुसमाचार के आदेश में उनसे यह अपेक्षा नहीं की गई थी कि वे उन परिस्थितियों में लड़ाई जारी रखें जहाँ उनका स्वागत नहीं किया जाता, लेकिन ईमानदारी से अपनी गवाही देने के बाद, उन्हें कहीं और चले जाने की आवश्यकता थी। लूका 9:5 से तुलना करें। यीशु ने कहा, और

जहाँ कहीं वे तुम्हें स्वीकार न करें, वहाँ से निकलकर अपने पैरों की धूल झाड़ दो, ताकि उनके विरुद्ध गवाही हो।

इसलिए, वे बस लूका के सुसमाचार में गुरु यीशु के निर्देशों का पालन कर रहे हैं, जब प्रेरितों के काम में प्रेरित उन जगहों से आगे बढ़ते हैं जहाँ उनका बहुत ही अप्रिय स्वागत होता है।
पॉल की एक अलग विशेषता उभर कर सामने आती है। पॉल न्यायालय को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक स्थान के रूप में उपयोग करता है।
गवाह।

उसकी चिंता खुद का बचाव करने की नहीं बल्कि सुसमाचार का प्रचार करने की है। लूका 21:12
15 के माध्यम से. लूका 21:12.

जब हमने यह सुना, तो हमने और वहाँ के लोगों ने उससे यरूशलेम न जाने का आग्रह किया।
पौलुस कहता है, अगबुस, भविष्यद्वक्ता ने पौलुस की कमरबंद ली, अपने हाथ-पैर बाँधे और
कहा, पवित्र आत्मा यों कहता है, यरूशलेम में यहूदी इस प्रकार कमरबंद वाले को बाँधेंगे और
उसे अन्यजातियों के हाथों में सौंप देंगे। जब हमने यह सुना, तो हमने और वहाँ के लोगों ने उससे
यरूशलेम न जाने का आग्रह किया।

तब पौलुस ने उत्तर दिया, तुम क्या कर रहे हो, रो रहे हो और मेरा हृदय तोड़ रहे हो? क्योंकि मैं न
केवल जेल में रहने के लिए तैयार हूँ, बल्कि प्रभु यीशु के नाम पर यरूशलेम में मरने के लिए भी
तैयार हूँ। और जब वह राजी न हुआ, तो हम रुके, और कहा, प्रभु की इच्छा पूरी हो। विरोध प्रचार
का अवसर बन जाता है।

निःसंदेह, यह पीटर और स्टीफन के लिए भी सच था जब वे अदालत के दृश्यों में दिखाई दिए।
दूसरा तथ्य यह है कि विरोध के बावजूद, परमेश्वर का वचन अपनी विजयी प्रगति जारी रखता है।
उत्पीड़न के बीच भी, ईश्वर का हाथ मिशनरियों पर है।

यह उन्हें खतरे और पीड़ा से दूर नहीं करता है, लेकिन अवसर पर, उन्हें अपने दुश्मनों से दैवीय
सुरक्षा मिलती है। यहाँ फिर से, ल्यूक का यथार्थवाद सामने आता है। जेम्स मर जाता है, लेकिन
पीटर एक और दिन लड़ने के लिए जीवित बच जाता है।

हर तरह की बाधा और खतरे के बावजूद पौलुस को यरूशलेम से रोम तक सुरक्षित लाया गया।
चाहे कितना भी विरोध क्यों न हो, परमेश्वर का घोषित उद्देश्य अवश्य पूरा होगा। प्रेरितों के काम
की कहानी परमेश्वर के वचन की विजयी प्रगति की कहानी है।

चौथा, धार्मिक विषय। और हाँ, क्या हमने इसे देखा है? हर लेखक जिससे हमने सलाह ली है,
प्रेरितों के काम की पुस्तक और उसकी शिक्षाओं पर गैर-यहूदी समावेश पर जोर देता है, और
ठीक है, उन्हें ऐसा करना चाहिए। क्योंकि जैसे-जैसे प्रेरितों के काम 1.8 आगे बढ़ता है, आपको
पवित्र आत्मा प्राप्त होगी।

इसका तात्पर्य आपको गवाही के लिए सशक्त बनाना है, जो यरूशलेम, यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी के अंत तक होगा। जैसे-जैसे वह उद्देश्य पूरा होता है, अन्यजातियों को परमेश्वर के लोगों में शामिल किया जाता है। इसलिए चौथा विषय परमेश्वर के लोगों में अन्यजातियों को शामिल करना है।

यह लॉन्गहैंड, शॉर्टहैंड जेंटायल समावेशन है। अधिनियम उस ज़बरदस्त तनाव को दर्शाता है जो गैर-यहूदी मिशन के आधार पर प्रारंभिक चर्च में मौजूद था। हालाँकि सुसमाचार में यीशु द्वारा दिए गए आदेश को दर्ज किया गया है कि उनके शिष्यों को सभी देशों में सुसमाचार ले जाना चाहिए, सबसे पहले, चर्च यहूदियों से बना था और यहूदियों के बीच अपना प्रचार करता था।

एक व्यापक लोकप्रिय धारणा के विपरीत, ल्यूक ने पेंटेकोस्ट के दिन यहूदी धर्मांतरण करने वालों के अलावा अन्यजातियों की उपस्थिति का कोई उल्लेख नहीं किया है, अधिनियम 2:10। लेकिन कुछ ही वर्षों में, चर्च ने खुद को सामरियों, खतनारहित ईश्वर-भयवादियों और अंततः बुतपरस्त अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार करते हुए पाया। इस प्रगति को ल्यूक ने दैवीय इच्छा और भविष्यवाणी के रूप में देखा है। यह घटनाओं का एक ऐसा मोड़ था जो चर्च की किसी सचेत योजना से अलग घटित हुआ था।

चर्च को इस तथ्य से सहमत होना पड़ा। समस्या का सार यह था कि क्या चर्च के उदय ने एक नये समाज का निर्माण किया था जो यहूदी धर्म से भिन्न था। चूंकि पहले ईसाई यहूदी थे, इसलिए उनके लिए यहूदियों के रूप में रहना, अपने बच्चों का खतना करना और मूसा के कानून के अनुसार रहना स्वाभाविक था, हालाँकि माना जाता है कि कानून की व्याख्या में भिन्नताएं हो सकती थीं, और यीशु ने स्वयं ऐसा किया था। इसके कुछ पहलुओं के संबंध में काफी स्वतंत्रता प्रदर्शित की गई।

ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए यहूदी धर्मान्तरित लोगों से भी इसी तरह की जीवन शैली की अपेक्षा की जा सकती है। तब ईसाई धर्म को यहूदी धर्म की सच्ची और उचित पूर्ति के रूप में देखा जा सकता था। वादा किया गया मसीहा आया था और अपने लोगों के लिए नवीनीकरण लाया था। दो कारकों ने इस आसान धारणा को बिगाड़ दिया।

एक तरफ, यह बात स्पष्ट होती जा रही थी कि यहूदी नेता और बहुत से लोग यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, और पहली सदी के यहूदी धर्म से ईसाई धर्म में यीशु को मसीहा के रूप में शामिल करने के आसान विकास को खारिज कर दिया गया। कोई आसान कदम नहीं था। वास्तव में, शुरुआती चर्च के समकालीन यहूदी धर्म ने सच्चाई से मुंह मोड़ लिया था।

यह स्टीफन ही थे जिन्होंने अपने समय के यहूदियों की आलोचना की थी, उनका आरोप था कि वे मूसा के कानून का सही तरह से पालन करने में विफल रहे हैं और मंदिर में ईश्वर की उनकी पूजा उन्हें नापसंद है। आश्चर्य की बात नहीं है कि इस हमले ने यहूदी नेताओं से कड़ा विरोध भड़काया, और हमें संदेह हो सकता है कि स्टीफन के दृष्टिकोण को चर्च के सभी सदस्यों ने तुरंत साझा नहीं

किया। फिर भी, यह तेजी से स्पष्ट होने लगा कि आधिकारिक यहूदी धर्म चर्च का विरोध करता था और इसके विचारों को विधर्मी मानता था।

दूसरी ओर, चर्च में अन्यजातियों के प्रवेश की समस्या थी। इससे न केवल चर्च के खिलाफ यहूदी धर्म का विरोध तेज हो गया, बल्कि चर्च के भीतर उसके चरित्र और उसकी जीवन शैली को लेकर भी तीखे सवाल खड़े हो गए। जिस तरह से ल्यूक ने चर्च की प्रकृति की कल्पना की, उसके बारे में बहुत चर्चा हुई है।

एक दृष्टिकोण यह है कि उन्होंने इसे मूलतः एक यहूदी संस्था के रूप में देखा। ईश्वर के लोग, जिनमें यहूदी शामिल हैं, और जिनसे यहूदियों ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया, उन्होंने खुद को अलग कर लिया, और जिसमें विश्वास करने वाले अन्यजातियों को शामिल किया जा सकता है। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि ल्यूक ने ईश्वर के उद्देश्य को एक नए इज़राइल की सभा के रूप में देखा, जो यहूदियों और अन्यजातियों दोनों से बना था और वह यहूदी धर्म से चर्च के प्रगतिशील अलगाव का वर्णन करता है।

सच्चाई शायद इन चरम सीमाओं के बीच कहीं है। हमारे विचार में, ल्यूक चर्च की यहूदी उत्पत्ति और पुराने नियम की भविष्यवाणी में इसकी जड़ों पर जोर देता है, लेकिन दिखाता है कि यह ईश्वर के लोग हैं, जो विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर-यहूदियों से बने हैं, जिसमें यहूदियों को यहूदी धर्म की पूर्ति मिल सकती है, और गैर-यहूदियों को यहूदी बनने की आवश्यकता नहीं है। वे दो दृष्टिकोण, पहला जेरवेल नामक एक विद्वान के नाम से जुड़ा हुआ है।

चर्च मूलतः यहूदी है, ईश्वर के लोग यहूदियों से मिलकर बने हैं, और जिनसे यहूदियों ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया और जिसमें विश्वास करने वाले गैर-यहूदियों को इस यहूदी आंदोलन में शामिल किया जा सकता है। अन्य लोगों का मानना है कि चर्च एक नया इज़राइल है, जो यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से बना है, और ल्यूक ने चर्च को यहूदी धर्म से क्रमिक रूप से अलग करने का वर्णन किया है। मार्शल कहते हैं कि सच्चाई इन दोनों के बीच में है।

व्यावहारिक स्तर पर यह कैसे संभव है? समस्या दोहरी है। सबसे पहले, क्या यहूदी ईसाई मूसा के कानून का पालन न करने वाले लोगों के संपर्क में आने से अशुद्ध हुए बिना अन्यजातियों के साथ संगति कर सकते थे? दूसरे, क्या अन्यजाति केवल यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करके परमेश्वर और उसके लोगों के साथ एक सच्चे रिश्ते में आ सकते थे? क्या उन्हें खतना सहित यहूदी कानून को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं थी? लूका को पूरा यकीन था कि अन्यजातियों को खतना करवाने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन इस समाधान ने यहूदी ईसाइयों के लिए विवेक के गहन संघर्ष को जन्म दिया। कई वर्षों तक, सख्ती से कानून का पालन करने वाले यहूदी ईसाइयों का एक समूह चर्च के बाकी हिस्सों से अलग-थलग होकर फिलिस्तीन में मौजूद रहा।

ल्यूक दर्शाता है कि शुरुआती दिनों में समस्या का समाधान कैसे किया गया था। जब परमेश्वर ने अन्यजातियों पर अपनी आत्मा उंडेली, तो पतरस उन्हें परमेश्वर के लोगों के सदस्यों के रूप में

स्वीकार करने और उनके साथ भोजन करने के लिए तैयार था। परमेश्वर से उसे जो दर्शन प्राप्त हुआ उसने उसे दिखाया कि अब स्वच्छ और अशुद्ध खाद्य पदार्थों के बीच कोई अंतर नहीं है।

लेकिन यह संदिग्ध है कि अन्य यहूदी ईसाई कितनी जल्दी पीटर के दृष्टिकोण से सहमत हो गए। और यहां तक कि उसे इसे लगातार बनाए रखना भी मुश्किल लगा, क्योंकि गलातियों 2 में पॉल ने गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ असहमत होने के लिए उसके चेहरे पर उसकी आलोचना की। और जब यहूदी ईसाई आये, तो वह अन्यजातियों को छोड़कर यहूदियों के साथ चला गया।

पॉल कहते हैं, पीटर, तुम सुसमाचार के अनुसार नहीं जी रहे हो। वह कुछ हद तक पाखंडी था और अपने सिद्धांतों का पालन नहीं करता था। भगवान हमें पाखंड से बचाए रखें।

जब यरूशलेम चर्च ने इस मामले पर विचार करने के लिए अन्ताकिया के प्रतिनिधियों से मुलाकात की, तो जो मूलभूत बात स्वीकार की गई वह यह थी कि अन्यजातियों को खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, उसी समय, उन्हें भोजन, मूर्तियों के लिए बलिदान, और यहूदी तरीके से वध न किए गए मांस से परहेज़ करके और यौन व्यवहार के यहूदी मानकों का पालन करके अपने यहूदी साथियों को अलग-थलग करने से बचने के लिए कहा गया था। ये आवश्यकताएँ आराधनालयों में पूजा करने वाले ईश्वर-भक्तों द्वारा पहले से ही स्वीकार किए गए नियमों से कुछ हद तक मिलती-जुलती हैं।

एकमात्र मुश्किल बिंदु मांस के बारे में नियम था, और यह यहूदियों के साथ आम भोजन पर ही लागू हो सकता था, मार्शल ने नोट किया। इस तरह, सख्ती से कानून का पालन करने वाले यहूदियों के लिए गैर-यहूदी मिशन की वैधता को पहचानना संभव था। नियम कितने समय तक लागू रहे, यह ज्ञात नहीं है।

यहूदी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के पक्ष में बढ़ते कट्टरपंथी दबाव के तहत संभवतः यरूशलेम में उन्हें गंभीरता से लिया गया था। 1 कुरिन्थियों 9 के अनुसार, पॉल स्वयं यहूदियों के बीच एक कानून का पालन करने वाले यहूदी के रूप में रहते थे, हालाँकि उन्होंने अपनी अंतरात्मा की स्वतंत्रता का कड़ा विरोध किया। जब वह यहूदियों के साथ था तो वह एक यहूदी के रूप में रहने के लिए अंतरात्मा से बाध्य नहीं था, लेकिन उसने सुसमाचार के लिए ऐसा किया।

वह स्वतंत्र था. स्वतंत्र का अर्थ है, ईसाई स्वतंत्रता का अर्थ है कि आपको हमेशा अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग नहीं करना है। आप कमजोर भाइयों या बहनों की खातिर या इंजीलवाद में अपमान न करने की खातिर स्वतंत्र हैं, जिनके पास सुसमाचार की स्वतंत्रता नहीं है।

हालाँकि, यह संभावना नहीं है कि यरूशलेम के नियमों का लंबे समय तक या व्यापक प्रचलन रहा हो, और संभवतः उनका उपयोग बंद हो गया हो। जब उन्हें प्रकाशितवाक्य 2:14 और 20 में प्रतिध्वनित किया जाता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मांस के बारे में नियम को चुपचाप हटा दिया गया है। सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों में, पिरगमुन में कलीसिया, लेकिन मेरे पास आपके खिलाफ कुछ बातें हैं।

तुम्हारे यहाँ कुछ लोग हैं जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएल के पुत्रों के सामने ठोकर का कारण रखना सिखाया ताकि वे भोजन करें, मूर्तियों के लिए बलिदान करें और व्यभिचार करें। अमरता नहीं, ध्यान रहे, अनैतिकता। आयत 20, थुआतीरा की कलीसिया, लेकिन मेरे पास तुम्हारे खिलाफ यह है, कि तुम उस स्त्री ईज़ेबेल को बर्दाश्त करते हो, जो अपने आप को भविष्यद्वक्ता कहती है और मेरे सेवकों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के लिए बलिदान किए गए भोजन को खाने के लिए सिखाती और बहकाती है।

अन्यजातियों की स्वीकृति के साथ-साथ, लूका ने यहूदियों द्वारा सुसमाचार को स्वीकार करने से बढ़ते इनकार का भी वर्णन किया है। पौलुस का नियमित अभ्यास स्थानीय आराधनालय में अपना मिशन शुरू करना था, और हमें लगभग यह आभास हो गया था कि जब यहूदियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया, तभी उसने अन्यजातियों की ओर रुख किया। जैसा कि हमने देखा, प्रेरितों के काम 13, 46 इसका एक स्पष्ट उदाहरण है।

ऐसा कहा जाता है कि यहूदियों ने ईर्ष्या के कारण पॉल का विरोध करने के लिए इकोनियम शहर में लोगों को भड़काया। यह बात मुझे परेशान करती है। पॉल और बरनबास ने निर्भीकता से कहा कि उन्होंने पॉल की कही बातों का खंडन किया, उसका मज़ाक उड़ाया और इतना हंगामा किया कि वे प्रचार करना भी बंद कर दिए।

पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, यह आवश्यक है कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम को सुनाया जाए, परन्तु जब से तुम ने अपने आप को त्याग दिया और अपने आप को अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझा, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिर रहे हैं। यह कहना बेहतर होगा कि गैर-यहूदी मिशन तब हुआ जब यहूदियों को पहले सुसमाचार सुनने का अवसर मिला। पॉल ने माना कि सुसमाचार पहले यहूदियों के लिए था, लेकिन यूनानियों के लिए भी था, रोमियों 1:16।

जब यहूदियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया, तो उन्हें भगवान ने अपने लोगों से खारिज कर दिया, यह एक तथ्य का प्रतीक था जब मिशनरियों ने उनके खिलाफ अपने पैरों से धूल झाड़ दी और अन्यजातियों की ओर मुड़ गए। प्रेरितों के काम 13:46 में जो बात कही गई है, जिसे मैंने अभी पढ़ा है, वह पुस्तक के 28, प्रेरितों के काम 28, 25 से 28 में चरमोत्कर्ष पर अत्यधिक जोर देकर दोहराई गई है। यह लगभग वही बात लगती है।

तुम्हें मालूम हो कि परमेश्वर का उद्धार अन्यजातियों के पास भेजा गया है। वे कठोर हृदय, अंधे नेत्र, बहरे कान आदि के बारे में यशायाह के शब्दों को उद्धृत करके सुनेंगे।

तो ऐसा लगता है कि यह पैटर्न है। फिर भी एक बात जो अजीब तरह से प्रेरितों के काम में अनुपस्थित है, वह है यरूशलेम पर ईश्वरीय न्याय का कोई संदर्भ, जो लूका के सुसमाचार में बहुत प्रमुखता से दर्शाया गया है। लूका 13, 34 और उसके बाद।

यरूशलेम पर विलाप करो। ओह, यरूशलेम, यरूशलेम, यीशु ने विलाप किया। वह शहर जो भविष्यद्वक्ताओं को मारता है और उन लोगों को पत्थर मारता है जिन्हें उसके पास भेजा जाता है।

कितनी बार मैंने तुम्हारे बच्चों को इकट्ठा करना चाहा जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, पर तुम तैयार नहीं हुए। देखो, तुम्हारा घर सुनसान पड़ा है। और मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।

अच्छा प्रश्न। यह अधिनियमों से अनुपस्थित क्यों है? लूका 41 से 44 तक 19. और जब उस ने निकट जाकर नगर को देखा, तो यीशु उस पर रोकर कहने लगा, काश तू आज ही जानता होता, कि मेल की बातें क्या हैं।

परन्तु अब वे तेरी आंखों से ओझल हैं, क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे, जब तेरे शत्रु तेरे चारों ओर बाड़ा बान्धेंगे, और तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से घेर लेंगे, और भूमि पर गिरा देंगे। आप और आपके बच्चे आपके भीतर। और वे तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे, क्योंकि तू ने अपने दर्शन का समय न जाना।

यीशु के हृदय पर ध्यान दें. उनके शब्द निर्णय के हैं, लेकिन उनमें बचाने की इच्छा से पैदा हुई करुणा का मिश्रण है। कुछ लोग आसानी से ईश्वर की संप्रभु इच्छा के साथ समन्वय नहीं कर सकते हैं, जिसे बाइबल एक विरोधाभास के रूप में एक साथ रखती है, उन चीजों से संबंधित सभी कठिन स्थानों को दूर नहीं करती है।

प्रेरितों के काम 21, युगांत संबंधी प्रवचन, प्रेरितों के काम 21:20. परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ना निकट आ गया है। तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।

जो लोग शहर के अंदर हैं वे बाहर चले जाएँ। जो लोग गाँव में हैं वे अंदर न जाएँ। क्योंकि ये बदला लेने के दिन हैं जब लिखी हुई सारी बातें पूरी होंगी।

उन दिनों में गर्भवती स्त्रियों और दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिए हाय, क्योंकि पृथ्वी पर बड़ा संकट और इस जाति के विरुद्ध क्रोध होगा। वे तलवार की धार से मारे जाएँगे और सब जातियों में बन्दी बनाकर ले जाए जाएँगे। और यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा तब तक रौंदा जाएगा जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए।

यरूशलेम, जिसे सुसमाचार में प्रभु की अस्वीकृति के स्थान के रूप में दर्शाया गया है, वह स्थान बन जाता है जहां वह मृतकों में से जी उठता है, जहां आत्मा डाली जाती है, और जहां चर्च अपना काम शुरू करता है। अधिनियमों में, यह यरूशलेम के बजाय आधिकारिक यहूदी धर्म है, जो सुसमाचार को अस्वीकार करने के लिए निंदा के अधीन है। चर्च का जीवन और संगठन, क्रमांक पाँच।

क्या हम यह तर्क दे सकते हैं कि यरूशलेम का विनाश अधिनियमों में अनुपस्थित है क्योंकि यह यरूशलेम के विनाश से पहले लिखा गया था? चर्च का जीवन और संगठन। निस्संदेह, ल्यूक अपने समय के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के एक पैटर्न के रूप में, चर्च के जीवन और पूजा की एक तस्वीर पेश करने के लिए चिंतित है। प्रेरितों के काम 2:42-47, और 4:32-37 के शुरुआती

अध्यायों के संक्षिप्त सारांश से, हमें शिक्षण, संगति, प्रार्थना और रोटी तोड़ने के लिए एक साथ मिलने वाले छोटे समूहों की तस्वीर मिलती है।

चर्च में प्रवेश जल से बपतिस्मा लेकर होता है। लूका ने चर्च के जीवन में आत्मा के महत्व पर विशेष रूप से जोर दिया है। आत्मा हर ईसाई की आम संपत्ति है, जो आनंद और शक्ति का स्रोत है।

और ईसाई नेता वे लोग हैं जो अपने विभिन्न कार्यों को करने के लिए विशेष रूप से आत्मा से भरे हुए हैं। आत्मा चर्च को नेताओं के चयन और उसके सुसमाचार प्रचार कार्य में इस हद तक मार्गदर्शन करती है कि प्रेरितों के काम को कभी-कभी पवित्र आत्मा के कामों की पुस्तक के रूप में वर्णित किया गया है। जैसा कि एफएफ ब्रूस ने प्रसिद्ध रूप से किया था, इंटरप्रिटेशन नामक पत्रिका में एक पुराने लेखक को उद्धृत करते हुए, खंड 27, 1973, पृष्ठ 166 और उसके बाद, पवित्र आत्मा के काम।

प्रारंभ में, चर्च का नेतृत्व यरूशलेम में बुजुर्गों के साथ-साथ प्रेरितों के हाथों में था। और यरूशलेम में चर्च ने अन्य चर्चों के संबंध में एक महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा कर लिया, जो बाद में बड़ा हुआ। स्थानीय चर्चों में बुजुर्ग थे, और पैगंबरों और शिक्षकों को विशेष महत्व दिया जाता है, जिनमें से कुछ निवासी प्रतीत होते हैं, जबकि अन्य अधिक भ्रमणशील थे।

ऐसे लोगों को कैसे नियुक्त किया गया और उन्होंने क्या किया, इसके बारे में ल्यूक इतना कम कहते हैं कि हम केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उन्होंने इसे महत्वपूर्ण नहीं माना। फिर भी हमें बताया गया है कि यहूदा के स्थान पर एक प्रेरित को कैसे नियुक्त किया गया और प्रेरितों की सहायता के लिए सात व्यक्तियों को कैसे चुना गया। हम संक्षेप में सुनते हैं कि कैसे अन्ताकिया में चर्च द्वारा मिशनरियों को भेजा गया था और पॉल ने उन चर्चों में बुजुर्गों को कैसे नियुक्त किया जिनकी उन्होंने स्थापना की थी।

यह दिखाने के लिए पर्याप्त सबूत है कि ल्यूक के लिए, महत्वपूर्ण कारक चुने गए व्यक्तियों के आध्यात्मिक गुण और उन्हें नियुक्त करने वाली बैठकों में आत्मा का मार्गदर्शन थे। हम मिशनरियों के काम के बारे में भी कुछ सीखते हैं। टीम वर्क का सिद्धांत प्रारंभ से ही स्थापित किया गया था।

अधिकांश भाग में, मिशनरियों ने तीन या अधिक के समूहों में यात्रा की। पीटर और फिलिप नियम के अपवाद थे। अध्याय 8 से 10 तक.

ल्यूक की प्रस्तुति के तरीके ने कई पाठकों को सुझाव दिया है कि हमें पॉल और उसके सहयोगियों को मिशनरी यात्रा करने वाले के रूप में सोचना चाहिए। लेकिन कथा के बारीकी से अध्ययन से पता चलता है कि, वास्तव में, पॉल काफी समय तक आबादी के महत्वपूर्ण केंद्रों में रहे। उदाहरण के लिए, इफिसुस में तीन साल।

ल्यूक ने पॉल के काम करने के सिद्धांतों को पूरी तरह से पहचाना या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन वह निश्चित रूप से हमें इस बात का सबूत देता है कि पॉल की यात्राएँ सीटी-स्टॉप यात्राओं

से बहुत दूर थीं। जिस तरह से सुसमाचार का प्रचार किया गया था उसके उदाहरण के रूप में ल्यूक ने कई उपदेशों को दर्ज किया है। और पॉल का ईसाई नेताओं से उनकी जिम्मेदारियों के बारे में बात करने का एक उदाहरण, जैसा कि हमने देखा है, प्रेरितों के काम 20:17 से 35 तक।

इफिसुस के बुजुर्गों के लिए उनके उपदेश ने इफिसस में एक प्रकार की प्रोटो-प्रेसबिटरि को इकट्ठा किया। इन मिशनरी उपदेशों और यहूदी और रोमन निकायों के समक्ष परीक्षण पर अधिनियमों के भाषणों में विविधता निस्संदेह उन विभिन्न तरीकों को चित्रित करने के लिए है जिसमें लोगों के विभिन्न समूहों के लिए सुसमाचार प्रस्तुत किया गया था। यहूदी और यूनानी, सुसंस्कृत और असंस्कृत, और इस धारणा का विरोध करना कठिन है कि उपदेशों को ल्यूक के पाठकों के लिए अपने स्वयं के प्रचार में उपयोग करने के लिए मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यह इस तरह की सामग्री है जिसने प्रेरितों के काम को शिक्षाप्रद के रूप में चित्रित किया है। हालाँकि हेन्टजेन द्वारा इस्तेमाल किया गया यह शब्द कम से कम थोड़ा अपमानजनक लगता है, हेन्टजेन एक बहुत ही आलोचनात्मक विद्वान हैं जो वास्तव में प्रेरितों के काम की अधिकांश ऐतिहासिकता पर सवाल उठाते हैं; इस पुस्तक का वर्णन करने के लिए यह एक उचित और सम्मानजनक शब्द है। यह शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसका उद्देश्य लूका के दिनों के ईसाइयों को यह दिखाना है कि चर्च होने का क्या मतलब है और उन्हें शुरुआती दिनों में स्थापित पैटर्न के अनुसार कैसे जीना जारी रखना चाहिए।

लूका की कहानी दो ईसाई नेताओं, पीटर और पॉल के करियर पर आधारित है। दोनों पुरुषों के बीच दिलचस्प समानताएँ हैं और यीशु और पॉल के करियर के बीच कुछ समानताएँ भी देखी जा सकती हैं। कुछ विद्वानों ने इस समानता को विस्तार से समझने में बहुत चतुराई दिखाई है और संभवतः इसकी उपस्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर बताया है।

हॉवर्ड मार्शल संयम के विद्वान हैं। वे अक्सर कहते हैं, यहाँ एक दृष्टिकोण है, यहाँ दूसरा दृष्टिकोण है, और सत्य कहीं बीच में है। और वे मुझे बार-बार आश्चर्य करते हैं।

हालाँकि, व्यापक रूप से, यह दावा प्रेरक है और दिखाता है कि लूका ने चर्च और उसके मिशनरियों के जीवन के लिए उसके सांसारिक स्वामी के जीवन में एक आदर्श देखा। वह जो कह रहा है वह यह है कि लूका के सुसमाचार में यीशु का उदाहरण विशेष रूप से पतरस, लेकिन विशेष रूप से पौलुस के जीवन के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करता है। और यह ईश्वरीय रूप से निर्धारित है और हमें हमारे निर्देश के लिए दिया गया है।

अपने अगले व्याख्यान में हम प्रेरितों के काम की ऐतिहासिकता और उससे सीखे जाने वाले महत्वपूर्ण सबकों पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह हॉवर्ड मार्शल द्वारा सत्र 18 है, 3. विरोध के बावजूद प्रगति, 4. गैर-यहूदी समावेशन, 5. चर्च जीवन और संगठन।